१-प्रयागमें ऋषियोंका समागम; सूतजीके प्रति भरद्वाजजीका प्रश्न; सूतजीद्वारा कथारम्भ और सृष्टिक्रमका वर्णन.... १
२-ब्रह्मा आदिकी आयु और कालका स्वरूप..... ६
३-ब्रह्माजीद्वारा लोकरचना और नौ प्रकारकी सृष्टियोंका निरूपण..... ८
४-अनुसर्गके स्रष्टा..... ११
५-रुद्र आदि सर्गों और अनुसर्गोंका वर्णन, दक्ष प्रजापतिकी कन्याओंकी संततिका विस्तार..... १२
६-अगस्त्य तथा वसिष्ठजीके मित्रावरुणके पुत्ररूपमें उत्पन्न होनेका प्रसङ्ग..... १७
७-मार्कण्डेयजीके द्वारा तपस्यापूर्वक श्रीहरिकी आराधना; 'मृत्युञ्जय-स्तोत्र' का पाठ और मृत्युपर विजय प्राप्त करना..... २१
८-मृत्यु और दूतोंको समझाते हुए यमका उन्हें वैष्णवोंके पास जानेसे रोकना; उनके मुँहसे श्रीहरिके नामकी महिमा सुनकर नरकस्थ जीवोंका भगवान्‌को नमस्कार करके श्रीविष्णुके धाममें जाना..... २७
९-यमाष्टक—यमराजका अपने दूतके प्रति उपदेश..... ३०
१०-मार्कण्डेयका विवाह कर, वेदशिराको उत्पन्न करके प्रयागमें अक्षयवटके नीचे तप एवं भगवान्‌की स्तुति करना; फिर आकाशवाणीके अनुसार स्तुति करनेपर भगवान्‌का उन्हें आशीर्वाद एवं वरदान देना तथा मार्कण्डेयजीका क्षीरसागरमें जाकर पुनः उनका दर्शन करना..... ३२
११-मार्कण्डेयजीद्वारा शेषशायी भगवान्‌का स्तवन..... ३६
१२-यम और यमीका संवाद..... ४२
१३-पतिव्रताकी शक्ति; उसके साथ एक ब्रह्मचारीका संवाद; माताकी रक्षा परम धर्म है, इसका उपदेश..... ४५
१४-तीर्थसेवन और आराधनसे भगवान्‌की प्रसन्नता; 'अनाश्रमी' रहनेसे दोष तथा आश्रमधर्मके पालनसे भगवत्प्राप्तिका कथन..... ५०
१५-संसारवृक्षका वर्णन तथा इसे नष्ट करनेवाले ज्ञानकी महिमा..... ५२
१६-भगवान् विष्णुके ध्यानसे मोक्षकी प्राप्तिका प्रतिपादन..... ५३
१७-अष्टाक्षरमन्त्र और उसका माहात्म्य..... ५७
१८-भगवान् सूर्यद्वारा संज्ञाके गर्भसे मनु, यम और यमीकी, छायाके गर्भसे मनु, शनैश्चर एवं तपतीकी उत्पत्ति तथा अश्वारूपधारिणी संज्ञासे अश्विनीकुमारोंका प्रादुर्भाव.... ६०
१९-विश्वकर्माद्वारा १०८ नामोंसे भगवान् सूर्यका स्तवन..... ६२
२०-मारुतोंकी उत्पत्ति..... ६६
२१-सूर्यवंशका वर्णन..... ६७
२२-चन्द्रवंशका वर्णन..... ६८
२३-चौदह मन्वन्तरोंका वर्णन..... ७०
२४-सूर्यवंश—राजा इक्ष्वाकुका भगवत्प्रेम; उनका भगवद्दर्शनके हेतु तपस्याके लिये प्रस्थान..... ७३
२५-इक्ष्वाकुकी तपस्या और ब्रह्माजीद्वारा विष्णुप्रतिमाकी प्राप्ति..... ७६
२६-इक्ष्वाकुकी संततिका वर्णन..... ८३

श्रीनरसिंहपुराण

२७-चन्द्रवंशका वर्णन ८५
२८-शान्तनुका चरित्र ८७
२९-शान्तनुकी संततिका वर्णन ९०
३०-भूगोल तथा स्वर्गलोकका वर्णन ९२
३१-ध्रुव-चरित्र तथा ग्रह, नक्षत्र एवं पातालका संक्षिप्त वर्णन ९७
३२-सहस्रानीक-चरित्र; श्रीनृसिंह-पूजनका माहात्म्य १०९
३३-भगवान्‌के मन्दिरमें झाड़ू देने और उसको लीपनेका महान् फल—राजा जयध्वजकी कथा ११०
३४-भगवान् विष्णुके पूजनका फल ११७
३५-लक्षहोम और कोटिहोमकी विधि तथा फल १२१
३६-अवतार-कथाका उपक्रम १२३
३७-मत्स्यावतार तथा मधु-कैटभ-वध ... १२४
३८-कूर्मावतार; समुद्रमन्थन और मोहिनी-अवतार १२७
३९-वाराह-अवतार; हिरण्याक्ष-वध १३१
४०-नृसिंहावतार; हिरण्यकशिपुकी वरदान-प्राप्ति और उससे सताये हुए देवोंद्वारा भगवान्‌की स्तुति १३२
४१-प्रह्लादकी उत्पत्ति और उनकी हरि-भक्तिसे हिरण्यकशिपुकी उद्विग्नता १३७
४२-प्रह्लादपर हिरण्यकशिपुका कोप और प्रह्लादका वध करनेके लिये उसके द्वारा किये गये अनेक प्रयत्न १४२
४३-प्रह्लादजीका दैत्यपुत्रोंको उपदेश देना; हिरण्यकशिपुकी आज्ञासे प्रह्लादका समुद्रमें डाला जाना तथा वहीं उन्हें भगवान्‌का प्रत्यक्ष दर्शन होना १४६
४४-नृसिंहका प्रादुर्भाव और हिरण्यकशिपुका वध १५४
४५-वामन-अवतारकी कथा १५८
४६-परशुरामावतारकी कथा १६२
४७-श्रीरामावतारकी कथा—श्रीरामके जन्मसे लेकर विवाहतकके चरित्र १६५
४८-श्रीराम-वनवास; राजा दशरथका निधन तथा वनमें राम-भरतकी भेंट १७७
४९-श्रीरामका जयन्तको दण्ड देना; शरभङ्ग, सुतीक्ष्ण और अगस्त्यसे मिलना; शूर्पणखाका अनादर; सीताहरण; जटायुवध और शबरीको दर्शन देना १९०
५०-सुग्रीवसे मैत्री; वालिवध; सुग्रीवका प्रमाद और उसकी भर्त्सना; सीताकी खोज और हनुमान्‌का लङ्कागमन २०१
५१-हनुमान्‌जीका समुद्र पार करके लङ्कामें जाना, सीतासे भेंट और लङ्काका दहन करके श्रीरामको समाचार देना २१३
५२-श्रीराम आदिका समुद्रतटपर जाना; विभीषणकी शरणागति और उन्हें लङ्काके राज्यकी प्राप्ति; समुद्रका श्रीरामको मार्ग देना; पुलद्वारा समुद्र पार करके वानरसेनासहित श्रीरामका सुवेल पर्वतपर पड़ाव डालना; अङ्गदका प्रभाव; लक्ष्मणकी प्रेरणासे श्रीरामका अङ्गदकी प्रशंसा करना; अङ्गदके वीरोचित उद्गार और दौत्यकर्म; वानर वीरोंद्वारा राक्षसोंका संहार; रावणका श्रीरामके द्वारा युद्धमें पराजित होना; कुम्भकर्णका वध; अतिकाय आदि राक्षस वीरोंका मारा जाना; मेघनादका पराक्रम और वध; रावणकी शक्तिसे मूर्च्छित लक्ष्मणका हनुमान्‌जीके द्वारा पुनर्जीवन; राम-रावण-युद्ध; रावण-वध; देवताओंद्वारा श्रीरामकी स्तुति; सीताके साथ अयोध्यामें आनेपर श्रीरामका राज्याभिषेक और अन्तमें पुरवासियोंसहित उनका परमधाम गमन २१८
५३-बलराम-श्रीकृष्ण-अवतारके चरित्र ... २२८
५४-कल्कि-चरित्र और कलि-धर्म २३५

५५-शुक्राचार्यको भगवान्‌की स्तुतिसे पुनः नेत्रकी प्राप्ति २३९
५६-विष्णुमूर्तिके स्थापनकी विधि २४१
५७-भक्तके लक्षण; हारीत-स्मृतिका आरम्भ; ब्राह्मणधर्मका वर्णन २४६
५८-क्षत्रियादि वर्णोंके धर्म और ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थाश्रमके धर्मोंका वर्णन ... २४८
५९-वानप्रस्थ-धर्म २५८
६०-यति-धर्म २५९
६१-योगसार २६०
६२-श्रीविष्णु-पूजनके वैदिक मन्त्र और स्थान २६२
६३-अष्टाक्षर-मन्त्रके प्रभावसे इन्द्रका स्त्रीयोनिसे उद्धार २६४
६४-भगवद्भजनकी श्रेष्ठता और भक्त पुण्डरीकका उपाख्यान २७६
६५-भगवत्सम्बन्धी तीर्थ और उन तीर्थोंसे सम्बन्ध रखनेवाले भगवान्‌के नाम... २८६
६६-अन्यान्य तीर्थों तथा सह्याद्रि और आमलक ग्रामके तीर्थोंका माहात्म्य २८८
६७-मानस-तीर्थ, व्रत तथा इस पुराणका माहात्म्य २९२
६८-नरसिंहपुराणके पठन और श्रवणका फल २९५